एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आम के हानिकारक कीट एवं व्याधियों का प्रबन्धन

(चंद्र सिंह चौधरी[1], रतन लाल शर्मा[2] एवं *सुनीता चौधरी[3])
[1]कृषि विभाग, राजस्थान सरकार, भारत
[2]कृषि अनुसंधान केंद्र (कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर) केशवाना, जालौर-343001, राजस्थान, भारत
[3]श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर- 303329, जयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: choudharysunita116@gmail.com

1. मिलीबग : यह कीट आम को अत्यधिक हानि पहुंचाता है। इनके वयस्क एवं प्रौढ़ दोनों ही मुलायम प्ररोहों, पत्तियों तथा फूलों का रस चूसते हैं जिसका फूलों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

प्रबन्धन :

1. दिसम्बर माह में खेत की जुताई करनी चाहिए।
2. कीटों को वृक्षों के ऊपर चढ़ने से रोकने के लिए पेड़ के चारों ओर पोलीथीन की 30–40 से.मी. चौड़ी पट्टी जमीन से 60 से.मी. ऊंचाई पर तने के चारों तरफ लगाकर उसके निचले भाग में 15–20 से.मी. तक ग्रीस का लेप कर देना चाहिए।
3. एक मिलीलीटर रोगोर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
4. आवश्यकतानुसार उपरोक्त छिड़काव को 2–3 बार दोहराना चाहिए।

2. आम का फुदका : यह भूरे रंग का बहुत ही छोटा कीट होता है। वह आम के फूल, छोटे फल तथा नई वृद्धि का रस चूसता है जिससे पुष्पक्रम एवं छोटे फलों को काफी नुकसान पहुँचता है। फल मुरझाकर गिर जाते हैं तथा उपज में भारी नुकसान होता है।

प्रबन्धन :

1. बाग में साफ–सफाई रखनी चाहिए तथा समय–समय पर निराई–गुड़ाई करते रहना चाहिए।
2. मैलाथियान 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

3. प्ररोह पिटिका कीट : प्रभावित पेड़ों के प्ररोहों में गांठ बन जाती है तथा शाखा की बढ़वार रूक जाती है। कीट मार्च–अप्रेल के महीने में नई पत्तियों की मुख्य शिराओं पर अंडे देते हैं जिसके फलस्वरूप कीट विकास के साथ–साथ प्रभावित स्थान पर गांठ बन जाती है जिनमें पंखयुक्त वयस्क पाया जाता है।

प्रबन्धन :

1. कीट की रोकथाम के लिए दिसम्बर–जनवरी के महिने में गांठें तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
2. कीट का अधिक आक्रमण होने पर रोगोर अथवा नुवाक्रोन कीटनाशक रसायन को 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर अगस्त के प्रथम सप्ताह से 15 दिन के अंतर पर तीन छिड़काव करने चाहिए।

4. छाल एवं तना भक्षक कीट : यह कीट आम की छाल में घुसकर छाल को खाता है। तने एवं शाखाओं में सुरंग बनाकर वृक्ष को खोखला बना देता है।

प्रबन्धन :

1. मैलाथियान के 0.05–0.1 प्रतिशत घोल को 5 मि.ली. प्रति छिद्र के हिसाब से डाल देना चाहिए।
2. रूई को पेट्रोल या केरोसिन में भिगोकर कीट की सुरंगों के अन्दर भर देना चाहिए तथा उपर से मिटटी लगा देवें।

5. फल की मक्खी : मादा मक्खी फल के अन्दर 3–4 मि.मी. की गहराई में अंडे देती है। बाद में सूंडी निकलकर गूदे को खाना शुरू कर देती है। फलस्वरूप फल सड़ना शुरू हो जाते हैं। प्रभावित फल नीचे गिर जाते हैं।

प्रबन्धन :

1. प्रभावित फलों को नष्ट कर देना चाहिए।
2. प्रौढ़ मक्खियों की रोकथाम के लिए 0.03 प्रतिशत फॉस्फोमिडान दवा का छिड़काव करना चाहिए।
3. नवम्बर–दिसम्बर माह में उद्यानों में जुताई करनी चाहिए।

6. स्टोन विवील (गुठली धुन) : मादा कीट अपरिपक्व छोटे फलों अथवा पकने वाले फलों के छिलके के अंदरूनी भाग में अण्डे देती है। शिशु कीट गूदे में छेद करके गुठली को आहार बनाकर अंत में गिरी को क्षति पहुँचाते हैं।

प्रबन्धन :

1. बाग की सफाई समय–समय पर निराई–गुड़ाई व जुताई करते रहना चाहिए।
2. ग्रसित फलों को सप्ताहवार इकटठा कर नष्ट करना चाहिए।
3. फलन की प्रारिम्भक अवस्था में निम्बिसिडीन, मल्टीनीम, निमैरिन (0.2 प्रतिशत) का छिड़काव करना चाहिए।

आम की प्रमुख व्याधिया एवं उनका प्रबन्धन :

1. चूर्णित आसिता : मंजरियों और नई पत्तियों पर सफेद या धुसर चूर्णित वृद्धि दिखलाई पड़ती है। रोग का संक्रमण मंजरियों की शिखा से प्रारंभ होकर नीचे की ओर पुष्प अक्ष, नई पत्तियों और पतली शाखाओं पर फैल जाता है। इससे प्रभावित भागों की वृद्धि रूक जाती है। पुष्प और पत्तियाँ गिर जाती हैं। यदि संक्रमण के पूर्व फल लग गए हों तो वे अपरिपक्व अवस्था में ही गिर जाते हैं। राजस्थान में यह रोग अन्य आम उत्पादक क्षेत्रों की अपेक्षा कम लगता है।

प्रबन्धन :

1. रोकथाम के लिए 0.05 से 0.1 प्रतिशत कैराथेन या 0.1 प्रतिशत बाविस्टिन या 0.1 प्रतिशत बेनोमिल नामक कवकनाशी दवाओं का पहला छिड़काव जनवरी, दूसरा फरवरी के आरंभ में और तीसरा छिड़काव फरवरी के अन्त में करना चाहिए।

2. श्यामव्रण रोग : श्यामव्रण रोग से प्रभावित पत्तियों पर भूरे या काले, गोल या अनियमिताकार के धब्बे पाए जाते हैं। पत्तियों की वृद्धि रूक जाती है और ये सिकुड़ जाती हैं। कभी–कभी रोगजनक उतक सूखकर गिर जाते हैं जिससे पत्तियों में छिद्र दिखाई पड़ते हैं। उग्र संक्रमण में रोगी पत्तियाँ गिर जाती हैं। यह रोग मंजरी अंगमारी तथा फल सड़न के रूप में भी प्रकट होता है।

प्रबन्धन :

1. रोकथाम के लिए रोगी पौधे पर 0.2 प्रतिशत ब्लाईटॉक्स – 50 या फाईटलान नामक दवाओं के घोल का फरवरी से मई के मध्य तक दो–तीन छिड़काव करने चाहिए।
2. रोग ग्रसित टहनियों व पत्तियों को काट कर नष्ट कर देवें।